पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

में

हिन्दी विषय के अन्तर्गत
पीएच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तावित

छत्तीसगढ़ के दुर्ग–भिलाई अंचल के महिला कथाकारों के साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन

विषयक शोध प्रबंध
की
रूपरेखा

शोधार्थी
श्रीमती पुष्पलता चन्द्राकर

शोध निर्देशक
डॉ.कोमल सिंह शार्वा
प्राचार्य
भानुप्रताप देव शासकीय
पी.जी.महाविद्यालय कांकेर,
जिला–कांकेर (छ.ग.)

सह शोध निर्देशक
डॉ.(श्रीमती) श्रद्धा चन्द्राकर
प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, शास. वि.या.ता.
स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
शास. वि.या.ता. स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध केन्द्र
हिन्दी विभाग, शास. वि.या.ता. स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

1. शोध प्रबंध का शीर्षक

छत्तीसगढ़ के दुर्ग–भिलाई अंचल के महिला कथाकारों के साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन।

2. भूमिका

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व दुर्ग–भिलाई अविकसित ग्रामीण क्षेत्र था। भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना के फलस्वरूप यहां औद्योगिकीकरण प्रारंभ हुआ। अनेक उद्योग–धंधे स्थापित हुए। दुर्ग–भिलाई का ग्रामीण परिवेश से धीरे–धीरे शहरो इलाके में तब्दील हुआ। भिलाई इस्पात संयंत्र में रोजगार हेतु अनेक प्रांतों के लोग निवास करने लगे। इस कारण इसे लघुभारत की संज्ञा दी गई। समस्त प्रदेश से आये लोग विभिन्न भाषा–भाषी होने के बावजूद आपस में हिन्दी भाषा के माध्यम से एक सूत्र में जुडें । इस तरह हिन्दी उनके बीच जनसंपर्क का माध्यम बना। हिन्दी भाषा हमेशा भारत की सब भाषाओं को साथ लेकर चली एवं भारतीय मानसिकता, कला और संस्कृति की सबल संवाहिका रही है। हिन्दी भाषा ने अपने प्यार समन्वय और सहिष्णुता से दुर्ग–भिलाई बिरादरी को एकता के सूत्र में बाध दिया है।

भिलाई विविध कला, संस्कृति, आचार–विचार और जीवन–शैलियों का अनूठा मिलन केन्द्र है। इसकी समन्वित संस्कृति की रचना और उसके विकास में यहाँ की महिलाओं की प्रमुख भूमिका है। यहाँ की महिला प्रत्येक गतिविधि और धड़कन की साक्षी है। दुर्ग–भिलाई की साहित्यिक बिरादरी में महिलाओं की भी बराबर भागीदारी रही है। 50 के दशक के करीब अंचल में महिला साहित्यकारों ने लिखना प्रारंभ किया। सभी महिलायें लगभग समान आयु वर्ग की थीं। उनकी रचनाओं में बदलते समय की धड़कन थी।

भिलाई की साहित्यिक बिरादरी में महिलाओां ने अनक विधाओं में रचना कार्य किया है। कुछ महिला कथाकारों ने कहानी एवं उपन्यास दोनों विधाओं पर रचना–कार्य किया है एवं कुछ महिलायें सिर्फ कहानी ही लिखी है। महिला

कथाकारों की अनेक कृतियां प्रकाशित हुई है एवं अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई है।

इस दौरान अंचल में उभर कर आई कुछ महिला कथाकारों की महत्वपूर्ण कृतियां इस प्रकार है :– संतोष झांझी कृत 'परछाइयां' (कहानी संग्रह), 'कथा नहीं' (कहानी संग्रह), 'सरहदें आज भी' (उपन्यास), 'हवेली की औरतें' (उपन्यास), सरला शर्मा कृत 'सत्यंवद' (कहानी संग्रह), 'कुसुम कथा' (उपन्यास), नलिनी शर्मा कृत 'अनकहा सच' (उपन्यास), 'मृगतृष्णा' (कहानी संग्रह), नलिनी श्रीवास्तव कृत 'एक टुकडा सच' (कहानी संग्रह), 'केक्टस की चुभन' (कहानी संग्रह), पुष्पा तिवारी कृत 'जानो तो गाथा है' (उपन्यास), 'राधे बाबू आने वाले हैं' (उपन्यास) आदि। इसके अलावा प्रभा सरस, विद्या गुप्ता, मीता दास क कथा साहित्य का भी अपना विशेष महत्व है ।

महिला कथाकारों के साहित्य के केन्द्र में नारियां है। इनकी रचनाओं में स्त्री जीवन और स्त्री मन का लगभग हर रंग उभरकर आया है। कथा साहित्य में निम्न वर्ग के जीवन संघर्ष के प्रति संवेदना और सहानुभूति है। कुछ रचनायें पारिवारिक पृष्ठभूमि से जुड़ी हुई है। महिला कथाकारों के कहानियों में जीवन की अनुभूतियां, आसपास के पात्र, घटनायें और उन सभी को नजरों से देखा भोगा यथार्थ है।

महिला कथाकारों के कथा लेखन में मध्यवर्गीय परिवार के सपनों, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, हताशाओं, कुंठाओं की मिली जुली तस्वीर है। इनकी कृतियों में नारी पीड़ा के साथ समाज में घटित होने वाली उन घटनाओं की भी ईमानदार तस्वीर पेश की गई है, जहां औरत ही औरत की पीडा का कारण बनती है।

दुर्ग–भिलाई अंचल के सामाजिक परिवेश के साथ महिला कथाकारों की रचनाओं में विभिन्न प्रांतों के रंग है। परंपरावादी पात्रों को समय के साथ आधुनिक बनते हुए दिखाया गया है। ग्रामीण परिवेश से शहरों में आई मध्यम वर्गीय और निम्नवर्गीय स्त्रियों का जीवन संघर्ष कथा साहित्य में प्रकट हुआ है। विभिन्न वर्गों

की महिलाओं में पीढ़ियों का द्वन्द भी रचनाओं में पूरे प्रभाव के साथ इन कथाकारों की रचनाओं में परिलक्षित होता है।

आज की हिन्दी कथा लेखिकाओं की रचनायें न केवल विषय की नवीनता के कारण उल्लेखनीय हैं, वरन् भाषा और शिल्प की बुनावट में भी नवीनता है। हिन्दी कथा लेखिकाओं ने कहानी की विकास यात्रा में सम्मिलित होकर कहानी को एक नया कलेवर दिया है। आशय केवल कथा लेखन में लेखिकाओं के व्यापक साच यथार्थ के साक्षात्कार की नवसंकल्पना तथा नवचिंतन की ओर इशारा करना है।

दुर्ग भिलाई की महिला कथाकारों ने विगत दशकों से निरंतर साहित्य–सृजन किया है लेकिन उनकी सर्जनात्मकता का अध्ययन, समीक्षा एवं मूल्यांकन का कार्य नहीं हुआ है। इन रचनाकारों की सृजन–संवेदना की बुनावट में जितनी समानता है, उससे कहीं अधिक विविधता देखी जा सकती है, जिसका परीक्षण और विधिवत आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

प्रस्तावित शोध प्रबंध इस दिशा में आरंभिक प्रयत्न हो सकता है। इसका उद्‌देश्य मुख्यतः नगरीकरण और औद्योगिकीकरण के चलते निर्मित हो रहे एक नए समाज की संवेदना, उसके अंदरूनी तनाव और सामाजिक–नैतिक द्वंद को वास्तविक अनुभव के साक्ष्य से उद्‌घाटित करना तथा उसे समझने की चेष्टा करना है।

प्रस्तावित शोध अध्ययन को निम्नांकित अध्यायों में विभक्त किया गया है :–

अध्याय–1 : दुर्ग भिलाई की साहित्यिक परम्परा

- क) स्वतंत्रता पूर्व के रचनाकार
- ख) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के दौर के रचनाकार
- ग) समकालीन रचनाकार

अध्याय–2 : महिला कथाकार और उनका कृतित्व

- क) कहानी साहित्य
  1. संतोष झांझी – परिचय एवं साहित्य सृजन

2. सरला शर्मा – परिचय एवं साहित्य सृजन

3. नलिनी शर्मा – परिचय एवं साहित्य सृजन

4. डॉ. नलिनी श्रीवास्तव – परिचय एवं साहित्य सृजन

5. प्रभा सरस – परिचय एवं साहित्य सृजन

6. विद्या गुप्ता – परिचय एवं साहित्य सृजन

7. पुष्पा तिवारी – परिचय एवं साहित्य सृजन

ख) उपन्यास साहित्य

1. संतोष झांझी

2. सरला शर्मा

3. नलिनी शमा

4. पुष्पा तिवारी

अध्याय–3 : महिला कथाकारों के कहानी साहित्य का अंतर्वस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से अध्ययन

क) अंतर्वस्तु

ख) शिल्प विधान

अध्याय–4 : महिला कथाकारों के उपन्यास साहित्य का अंतर्वस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से अध्ययन

क) अंतर्वस्तु

ख) शिल्प विधान

अध्याय–5 : हिन्दी की कथा परम्परा के संदर्भ में दुर्ग–भिलाई अंचल के महिला कथाकारों के साहित्य का मूल्यांकन

क) कहानी लेखन

ख) उपन्यास लेखन

अध्याय–6 : उपसंहार एवं शोध निष्कर्ष।

परिशिष्ट– संदर्भ ग्रंथ सूची

3. संबंधित क्षेत्र में पूर्व में किये गये कार्य की संक्षिप्त समीक्षा :–

अंचल की समस्त महिला कथाकारों की अनेक कहानियों एवं उपन्यासों के केन्द्र में नारियां है। इनका रचना संसार नारी की पीड़ा को व्यक्त करता है और समाज में घटित होने वाली घटनाओं की ईमानदार तस्वीर पेश करता है। इनकी रचनाओं में मानवीय अनुभव के मार्मिक क्षण प्रकट हुए है। निम्न वर्ग के जीवन संघर्ष के प्रति संवेदना और सहानुभूति है। महिला कथाकारों की रचनायें हिन्दी की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में छपी है।

महिला कथाकारों की कहानी एवं उपन्यास पर समीक्षात्मक एवं शोधकार्य हुए है। संतोष झांझो के साहित्य के सभी विधाओं पर पृथक शोध कार्य हुए हैं, एवं उनकी सम्पूर्ण साहित्य पर पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में एक छात्रा सोनाली चक्रवर्ती ने शोध कार्य प्रारंभ किया है।

लेकिन महिला कथाकारों को लेकर उनके कहानियों एवं उपन्यासों का समग्र मूल्यांकन अभी तक नहीं हो पाया है।

4. शोधकार्य का उद्देश्य :–

इस शोध कार्य के माध्यम से दुर्ग–भिलाई की साहित्यिक परम्परा तथा स्वतंत्रता पूर्व के और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के दौर के रचनाकारों सहित समकालीन रचनाकारों की सृजनात्मकता का विवेचन किया जायेगा। इस अध्ययन के द्वारा महिला कथाकारों के कहानी एवं उपन्यास साहित्य का अंतर्वस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से परीक्षण एवं मूल्यांकन किया जायेगा।

5. प्रस्तावित कार्य से संबंधित क्षेत्र में पूर्व में हुए महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख :–

महिला कथाकारों को सम्मिलित रूप में लेकर उनके कहानियों एवं उपन्यासों का आलोचनात्मक मूल्यांकन के संदर्भ में कोई ठोस शोध कार्य अभी तक नहीं हो पाया है।

6. प्रस्तावित शोध प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु महिला कथाकारों के व्यक्तित्व और उनके सृजन कर्म की पड़ताल के लिय यथासंभव प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार आदि का भी प्रयोग किया जायेगा। विषयवस्तु की गहराई तक पहुंचने के लिये कथा परम्परा के संदर्भ में महिला कथाकारों के साहित्य का मूल्यांकन अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु कथा साहित्य के मूल्यांकन एवं विमर्श के प्रचलित मानदंडों का प्रयोग करने के साथ ही महिला कथाकारों के कहानी एवं उपन्यास साहित्य के अंतर्वस्तु एवं शिल्प विधान के अध्ययन के लिये समाज वैज्ञानिक पद्धतियों की सहायता भी ली जायेगी।

7. संभावित निष्कर्ष :–

हिन्दी की कथा परम्परा के संदर्भ में दुर्ग–भिलाई क्षेत्र की महिला रचनाकारों में कहानियों एवं उपन्यासों की अंतर्वस्तु एवं शिल्प विधान का अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं समीक्षीय है। इन रचनाकारों के कथा साहित्य में व्यक्त विचारधारा, उनकी मूल संवेदना, उनके रचनाकार–व्यक्तित्व तथ्य रचना प्रक्रिया एवं अभिव्यक्ति पक्ष का मूल्यांकन करते हुए रचनाओं में छिपी आंचलिकता, मध्यवर्गीय संवेदना, बदलते हुए समाज के भीतर नए जीवन मूल्यों के प्रति आसक्ति इत्यादि का अध्ययन किया जा सकेगा। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष संभवतः यह होगा कि औद्योगिक एवं शहरी संस्कृति ने सामाजिक संवेदना के स्वरूप–निर्धारण में निर्णायक भूमिका निभाई है, जिसे महिला–कथाकारों की साहित्यिक अभिव्यक्ति में देखा जा सकता है।

इस संभावित निष्कर्ष के आधार पर हिन्दी साहित्य की विभिन्न कथा परम्पराओं में दुर्ग–भिलाई अंचल के महिला कथाकारों का स्थान निर्धारित करने का प्रयत्न किया जाएगा।

8. पुस्तक सूची :–

आधार ग्रंथ

1. श्रीवास्तव, नलिनी, एम टुकड़ा सच, बेमेतरा : नवीन प्रकाशन, 1991
2. श्रीवास्वत, नलिनी, केक्टस की चुभन, दुर्ग : श्री प्रकाशन, 2002
3. श्रीवास्तव, नलिनी, एकादशी, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2015
4. श्रीवास्तव, नलिनी, अंतहीन प्रश्न, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2016
5. शर्मा, नलिनी, एक बार फिर, दिल्ली : इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2002
6. शर्मा, नलिनी, अनकहा सच, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2004
7. शर्मा, नलिनी, मृगतृष्णा, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2005
8. शर्मा, सरला, कुसुम–कथा, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2006
9. शर्मा, सरला, सत्यंवद, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2008
10. झांझी, संतोष, कथा नहीं, दुर्ग : श्री प्रकाशन, 2002
11. झांझी, संतोष, परछाइयां, दुर्ग : श्री प्रकाशन, 1999
12. झांझी, संतोष, तर्पण, दुर्ग : श्री प्रकाशन, 2002
13. झांझी, संतोष, सहर मेरे शहर की, रायपुर : आशु प्रकाशन
14. झांझी, संतोष, सरहदें आज भी, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2004
15. झांझी, संतोष, पराये घर का दरवाजा, दिल्ली : यश पब्लिकेशन्स, 2013
16. झांझी, संतोष, वो गलियां वो चौबारा, रायपुर : आशु प्रकाशन
17. झांझी, संतोष, हवेली की औरतें, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2009
18. झांझी, संतोष, आई लव यू दादी, रायपुर : वैभव प्रकाशन, 2008
19. तिवारी, पुष्पा, जानो तो गाथा है, हरियाणा : आधार प्रकाशन, 2001
20. तिवारी, पुष्पा, राधे गागू आने वाले है, दिल्ली : मेघा बुक्स, 2006

9. प्रत्याशी द्वारा प्रकाशित शोध पत्र :–

शोधार्थी

श्रीमती पुष्पलता चन्द्राकर

शोध निर्देशक
डॉ. कोमल सिंह शार्वा
(प्राचार्य)
भानुप्रताप देव शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कांकेर, जिला–कांकेर (छ.ग.)

सह शोध निर्देशक
डॉ.(श्रीमती) श्रद्धा चन्द्राकर
(प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग, शास. वि.या.ता.
स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य
शास. वि.या.ता. स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)